तापमान

अधिकतम 34 .0 डिग्री
न्यूनतम 28 .0 डिग्री

हरिभूमि

जींद-कैथल भूमि

रोहतक, रविवार, 29 जून 2025

11 जल संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी

11 पौधरोपण कर दिया पर्यावरणा बचाने का संदेश

खबर संक्षेप

बुजुर्ग ने रेलगाड़ी के आगे कूदकर दी जान

जींद। हांसी ब्रांच नहर रेलवे पूल के निकट शनिवार को बुजुर्ग ने रेलगाड़ी के आगे कूद आत्महत्या कर ली। मृतक मानसिक रूप से परेशान था। रेलवे पुलिस ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया। रेलवे पुलिस को सूचना मिली थी कि हांसी ब्राच नहर रेलवे पूल के निकट रेलगाड़ी के आगे एक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली।

पुलिस कर्मी बता 65 हजार रुपये की ठगी

कैथल। दुष्कर्म के झूठे केस में आरोपियों को लिफ्ट देने का बहाना लगा आरोपी ने स्वयं को पुलिस कर्मी बता युवक के साथ 65 हजार रुपये की ठगी कर ली। इस मामले में साइबर थाना की पुलिस ने युवक की शिकायत पर ठगी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। साइबर थाने में दी गई शिकायत में शहर निवासी सतलेश कुमार ने बताया कि उसका बेटा मुंबई में रहता है।

सुसराल से आ रहे युवक के साथ की मारपीट, केस

जुलाना। जुलाना क्षेत्र के पौली गांव के पास सुसराल से लौट रहे युवक के साथ चार युवकों ने लाठी डंडों से मारपीट की। शिकायत पुलिस को दी । पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। रिटोली गांव निवासी अनिल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि गत 19 मई को वह बाइक पर सवार होकर अपनी सुसराल से लौट रहा था।

ढांड से किशोरी का अपहरण, मामला दर्ज

कैथल। ढांड पुलिस ने एक किशोरी के अपहरण का मामला दर्ज किया है। ढांड के एक व्यक्ति ने दंड पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 27 जून को कोई अज्ञात उसकी 17 साल की बेटी का अपहरण कर ले गया। उसने तलाश की लेकिन कोई पता नहीं चला। जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर योगेंद्र सिंह ने बताया कि पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कब्जे के मकान की सील तोड़ी, महिला पर केस दर्ज

जींद। लोन का भुगतान न करने पर बैंक द्वारा सील किए गए मकान पर कब्जा करने पर शहर थाना पुलिस ने बैंक प्रबंधन की शिकायत पर एक महिला के खिलाफ मामला दर्ज किया है। बैंक के एलडीएम ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि राजनगर निवासी संतोष ने मकान पर लोन लिया था। जिसका भुगतान न करने पर बैंक ने मकान को सील कर कब्जे में ले लिया था।

झांसा दे फ्रॉड करने के दो आरोपित गिरफ्तार

जींद। ऑनलाइन शेयर मार्केट के माध्यम से पैसे कमाने का झांसा देकर फ्रॉड करने के मामले में गिरोह के दो और आरोपितों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपितों की पहचान अजमेर के किशनपुर निवासी कार्तिक और इमामुद्दीन के रूप में हुई है। दोनों आरोपितों को पूछताछ के बाद अदालत में पेश कर जिला जेल जींद भेजे दिया गया है।

रंजिशन हमला करने पर तीन के खिलाफ केस दर्ज

जींद। गांव पौली में रंजिशन हमला कर व्यक्ति को घायल करने पर जुलाना थाना पुलिस ने तीन लोगों को नामजद कर कुछ अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया है। रिटोली निवासी निवासी अनिल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसकी गांव पौली में गांव इंद्रगढ निवासी राहुल व अन्य के साथ कहासुनी हो गई थी।

प्रताडना के आरोप में पति नामजद

कैथल। महिला पुलिस कैथल ने दहेज प्रताड़ना का एक मामला दर्ज किया है। रामनगर भुना की एक विवाहिता ने पुलिस को शिकायत में बताया कि उसकी शादी कुछ में पूर्व शाहबाद के परविंदर के साथ रीती रिवाज अनुसार हुई थी। शादी के समय उसके माता-पिता ने हैसियत से बढ़कर दान दहेज भी दिया था।

जींद में 25 तो उचाना में 15 एमएम बरसात दर्ज, कई जगह जलभराव, तीन डिग्री लुढ़का तापमान

झमाझम बरसात ने उमस और गर्मी से दिलाई राहत

अधिकतम तापमान 34 तथा न्यूनतम 28 डिग्री दर्ज किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

जिले में मानसून के दस्तक देने के साथ ही शनिवार दोपहर बाद जींद तथा उचाना में झमाझम बारिश हुई। जिसने गर्मी तथा उमस से काफी राहत दी है। बारिश के साथ किसानों की बांछें भी खिल उठी हैं। कुछ स्थानों पर जलभराव से लोगों को परेशानी का सामना भी करना पडा। तापमान में भी तीन डिग्री की गिरावट दर्ज की गई। शनिवार को अधिकतम तापमान 34 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 28 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम में आद्रता 70 प्रतिशत तथा हवा की गति पांच किलोमीटर प्रति घंटा दर्ज की गई। शनिवार को जींद में 25 एमएम तथा उचाना में 15 एमएम बारिश दर्ज की गई। अन्य स्थानों पर बूंदाबांदी रही। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन दिन के दौरान गरज तथा चमक के साथ बारिश की संभावना है। पिछले एक सप्ताह से आकाश में बादलाई तो बनी हुई थी लेकिन बारिश न होने के कारण उमस के साथ गर्मी बनी हुई थी। शनिवार को दिन का आगाज बादलवाई के साथ हुआ। दिन चढ़ने के साथ उमस भी बढ़ गई। दोपहर बाद मौसम ने करवट ली और आकाश में बादल छा गए। जिसके साथ झमाझम बारिश शुरू हो गई। जिसने काफी हद तक उमस तथा गर्मी से राहत दी। आकाश में बादलों के जमावड़े से बारिश के आसार भी बने रहे।

आधे शहर में जलभराव, आधे में हलकी बारिश शनिवार दोपहर बाद आधे शहर में अच्छी बारिश तो आधे शहर में बूंदाबांदी रही। बारिश के कारण रोहतक रोड, भिवानी रोड, अर्बन एस्टेट, हाउसिंग बोर्ड इलाकों में बारिश का पानी गलियों में खड़ा हो गया। जबकि पटियाला चौक साइड में हल्की बारिश हुई। बारिश फसलों के लिए संजीवनी, मिली काफी राहतः शनिवार को दोपहर बाद बारिश ने फसलों को संजीवनी देने का काम किया है। धान रोपाई का सीजन चला हुआ है। जिसके चलते फसलों में पानी की जरूरत महसूस की जा रही थी।

अगले तीन दिनों तक बने बारिश के आसार, तापमान में आएगी गिरावट

उचाना। बैंक कॉम्प्लेक्स रोड पर भरे बारिश के पानी से गुजरते वाहन। *फोटो :हरिभूमि*

तीन दिन बरसात की संभावना

मौसम वैज्ञानिक डा. राजेश ने बताया कि मानसून ने दस्तक दे दी है। रफ्तार पकडने के साथ अच्छी बारिश होने की संभावना है। अगले तीन दिन तक आकाश में बादल छाए रहने तथा बारिश की संभावना बन रही है। तापमान मे भी गिरावट आएगी।

उचाना। बारिश के बाद धान रोपाई करते मजदूर। *फोटो :हरिभूमि*

पुख्ता प्रबंध

धान की रोपाई के लिए उन्हें महंगा डीजल ट्यूबवेल चलाने के लिए नहीं फूंकना पड़ेगा। कृषि विभाग के एसडीओ डा. बलजीत लाठर ने कहा कि बारिश धान की रोपाई के लिए फायदेमंद है। जनस्वास्थ्य विभाग एसडीओ सुनीता देवी ने कहा कि बारिश तेज होने से पानी निकासी होने में समय लग जाता है। पानी निकासी के पुख्ता प्रबंधन किए हुए है। पहले ही सीवरेज लाइन की सफाई करवाई गई थी ताकि पानी की निकासी को लेकर किसी तरह की समस्या न हो।

बारिश से धान रोपाई का कार्य रफ्तार पकड़ेगा। हालाकि बारिश जींद तथा उचाना इलाकों में हुई है। जबकि अन्य स्थानों पर बूंदाबांदी दर्ज हुई है। बादलों के छाने से बारिश के आसार भी बने रहे।

बाजारों में भरा पानी

उचाना। शनिवार शाम हुई तेज बारिश से कई दिनों से हो रही उमस से लोगों को राहत मिली तो किसानों के चेहरे भी बारिश से खिले नजर आए। किसान अब धान की रोपाई कर सकेंगे। बारिश के बाद धान की रोपाई तेजी पकड़ेगी। बारिश ने जहां गर्मी से राहत देने का काम किया तो बाजारों में बारिश के पानी के चलते हुए जलभराव के चलते लोगों को आवागमन में परेशानी का सामना हुआ। बैंक कॉम्प्लेक्स रोड, डाकघर रोड, राजेंद्रा कालोनी, रेलवे रोड बस स्टैंड सर्विस रोड, अनाज मंडी, लितानी रोड सहित शहर के हर बाजार में बारिश का पानी भरा नजर आया। वाहनों के बाजारों से आवागमन के दौरान पानी दुकानों तक पहुंच गया। बाजारों में पानी अधिक भरने से बाइक पानी के अंदर बंद होने से चालक परेशान रहे। बाजारों में आने वाले लोगों को पानी से होकर भी आना-जाना पड़ा। मुकेश, सुनील, राजा, योगेश ने कहा कि बारिश से गर्मी से राहत जरूर मिली है।

धान की रोपाई तेज

तपत बढ़ने के साथ-साथ उमस भी बढ़ रही थी। पंखे, कूलर से भी पसीने नहीं सूख रहे थे। बारिश आने से गर्मी से राहत जरूर लोगों को मिली है। पानी की निकासी नही होने से बाजारों, कालोनियों में पानी भरने से जरूर परेशानी का सामना करना पड़ा। बारिश के मौसम में हर बार ये समस्या बाजारों में होती है। वाहन चालक जगबीर, धर्मबीर, अमरजीत ने कहा कि बाजारों में भरे पानी के चलते आवागमन में परेशानी हुई। पानी अधिक होने से दो पहिया वाहन तो पानी में ही बंद हो रहे थे। बड़ी मुश्किल से आवागमन बाजारों से करना पड़ा। जो वाहन कुछ तेजी से आता उससे दुकानों के अंदर पानी जा रहा था। बारिश से राहत जरूर मिली लेकिन आफ्त पानी की निकासी नहीं होने से हुई। किसान राजेश, धोला, राजेंद्र ने कहा कि इन दिनों धान की रोपाई को लेकर किसान बारिश का इंतजार कर रहे थे। बारिश होने के धान की रोपाई तेजी पकड़ेगी। क्योंकि अब धान की रोपाई का समय शुरू हो गया है। बारिश से किसानों को फायदा होगा।

गुहला-चीका। घग्गर की खंडहर हालत को बंया करती तसवीर। *फोटो :हरिभूमि*

जिला प्रशासन की लापरवाही से बाढ़ का खतरा मंडराया, तैयारियों का हाल बेहाल

राजपाल जिंदल ▶▶ गुहला-चीका

हरियाणा सरकार के निर्देशों के बावजूद गुहला-चीका क्षेत्र में प्रशासन की लापरवाही साफ नजर आ रही है। मानसून दस्तक दे चुका है, मौसम विभाग ने हरियाणा और पंजाब में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है, लेकिन प्रशासनिक इंतजामों की हकीकत चिंताजनक है। बाढ़ से निपटने के लिए जहां व्यापक तैयारी की आवश्यकता थी, वहां प्रशासन के पास फिलहाल महज दस हजार मिट्टी से भरे कट्टे ही तैयार हैं। जानकारों के अनुसार अगर बाढ़ आती है, तो कम से कम एक लाख से ज्यादा मिट्टी के कट्टों की जरूरत पड़ेगी। यानी जमीनी हकीकत ये है कि प्रशासन के पास बाढ़ जैसी आपदा से निपटने का कोई भी ठोस इंतजाम नहीं है। पिछले साल साइफन की सफाई न होने से पानी की निकासी रुक गई थी और दर्जनों गांव बाढ़ की चपेट में आ गए थे। हजारों एकड़ फसल तबाह हो गई और लाखों का नुकसान हुआ। इस साल फिर वही लापरवाही दोहराई जा रही है। न नहरों की सफाई हुई, न साइफनों की मरम्मत, और न ही रेत व मिट्टी के कट्टों का पर्याप्त भंडारण किया गया है। पटियाला के समाना क्षेत्र की एसडीएम रिचा गोयल ने हरियाणा प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल उठाते कहा है कि अब तक जमीन पर कोई सफाई कार्य नहीं हुआ। उन्होंने हरियाणा के अधिकारियों से पत्राचार किया है और कहा कि वह खुद भी हरियाणा के उच्च अधिकारियों से संपर्क करेंगी।

स्थानीय नेता की नाराजगी

पूर्व विधायक कुलवंत बाजीगर ने बाढ़ संभावित इलाकों का दौरा करअधिकारियों की जमकर क्लास लगाई। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि समय रहते कार्यवाही नहीं हुई और बाढ़ आई तो जनता के बीच प्रशासन को जवाब देना पड़ेगा। उनका कहना है कि अधिकारी सिर्फ कागजी कार्यवाही और फोटो खिंचवाने में व्यस्त हैं, जबकि असल जरूरत जमीन पर मेहनत की है। मौके पर मौजूद अधिकारियों को जमकर फटकार लगाई। जब उनसे देरी का कारण पूछा तो कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला, जिससे नाराज होकर उन्होंने कहा कि यदि इस बार भी पानी आया तो संबंधित अधिकारियों को जनता के बीच पानी में खड़ा कर दिया जाएगा।

डीसी के आदेशों को ठेंगा

बता दें कि हाल ही में डीसी प्रीति ने गुहला क्षेत्र में बाढ़ बचाव प्रबंधों को लेकर नहरों व अन्य क्षेत्र का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को समय रहते प्रबंध पूरा करने के आदेश दिए थे लेकिन इसके बावजूद अधिकारियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। एसडीएम गुहला ने साधी चुप्पी: गुहला के एसडीएम प्रमेश सिंह से जब इस मामले में बात करनी चाही तो कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।

जायजा लेते।

सामान बाहर फेंकने पर दुकानदारों ने जताया रोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

शहर के सर्राफा बाजार में आपसी विवाद के चलते एक सर्राफ का दुकान का सामान बाहर फेंकने पर सर्राफ के दुकानदारों ने रोष जताया। इसी रोष स्वरुप शनिवार को सर्राफा बाजार के दुकानदारों ने अपनी दुकानें बंद कर प्रदर्शन किया। इससे पहले एक दुकान मालिक ने किराया न देने का आरोप लगा एक सर्राफ की दुकान से उसका सामान दुकान से बाहर निकलवाया था। इसके बाद अब हरियाणा स्वर्णकार एसोसिएशन भी दुकानदार के पक्ष में आई है। अब एसोसिएशन ने पुलिस से दोनों का विवाद सुलझवाने के साथ कसूरवार पर निष्पक्ष कार्रवाई की मांग की है। एसोसिएशन से जुड़े दुकानदारों ने कहा कि इस प्रकार की जबरदस्ती आज एक दुकानदार के साथ हुई है, कल दूसरों के साथ भी हो सकती है। दुकानदार सुरेश कुमार ने बताया कि दुकान के मालिक ताराचंद ने उसकी दुकान से सामान बाहर निकलवा कर गली में रख दिया। जिस समय सामान बाहर निकाला गया, उस समय करीब 15 लोग बाहर खड़े थे। उसने दुकान मालिक से कहा था कि वह दूसरी दुकान मिलते ही दुकान खाली कर देगा। वह समय पर दुकान का किराया भी दे रहा है। दुकान से सामान बाहर निकाले जाने के कारण उसका कुछ सामान भी खो गया है। हरियाणा स्वर्णकार संघ के कैथल प्रधान पवन कुमार ने बताया कि जिस तरीके से एक सुनार की दुकान बंद करवाई गई, यह सही नहीं है। बाहर से लोगों को बुलाकर दुकान खाली करवाना गलत है। इससे दुकानदार को जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई की जाए। इस मामले में सभी सर्राफ सुरेश के साथ हैं।

दुकान खाली करवाने की मांग

दुकान के मालिक ताराचंद ने बताया कि सुरेश ने उसकी दुकान पर कब्जा कर रखा है। उसने इस बारे में पंचायत भी की, लेकिन किरायेदार दुकान खाली नहीं कर रहा है। उसने सर्राफा बाजार के दुकानदारों से बातचीत के बाद ही दुकान खाली करवाई है। दुकान मालिक ने किरायेदार के आरोपों को निराधार बताया और कहा कि लोगों की सहमति से ही सामान बाहर रखा है। किरायेदार ने 2019 में दुकान ली थी। दुकान मालिक ने उसकी दुकान खाली करवाने की मांग की है।

जांच जारी

शहर थाना प्रभारी गीता रानी ने बताया कि यह दुकान के मालिक और किरायेदार के बीच आपस का विवाद है। शुक्रवार रात के समय दुकान के मालिक ने सामान बाहर निकाला तो झगड़े की आशंका को देखते हुए मौके पर ही टीम को भेज दिया था। इस मामले में किरायेदार की शिकायत ले ली है और इस पर जांच की जा रही है।

जुलाना। रेलवे स्टेशन पर रूकी ट्रेन। *फोटो :हरिभूमि*

रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की चपेट में आए पांच गोवंश, मौत

जुलाना। जुलाना रेलवे स्टेशन पर शनिवार दोपहर बाद ट्रेन की चपेट में आने से पांच गौवंश की मौत हो गई। दिल्ली से बठिंडा जाने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन तीन बजकर 12 मिनट पर जब जुलाना रेलवे स्टेशन पर पहुंची तो ट्रेन के आगे पांच गौवंश आ गए। पांचों गौवंशों को ट्रेन काफी दूर तक घसीटती रही। जब ट्रैन के आगे एक गौवंश फंस गए तो ट्रेन रोकनी पड़ी। स्टेशन पर 30 मिनट तक ट्रेन रुकी रही। दुर्घटना में ट्रेन के अगले हिस्से को भी नुकसान हुआ। घटना की सूचना पाकर विकलांग गौशाला की टीम मौके पर पहुंची और पांच मृत गौवंश को पटरी से उठाया। स्टेशन मास्टर सुमित ने बताया कि स्टेशन के पास ही गौवंश बैठते हैं। लोग वहीं पर पशुओं के लिए चारा डाल जाते हैं। दोपहर बाद जब इंटरसिटी एक्सप्रैस ट्रेन स्टेशन के पास पहुंची तो ट्रैन का हॉरन बजा तो पांच गौवंश हड़बड़ा गए और ट्रेन की चपेट में आ गए। रेलवे द्वारा स्टेशन पर दीवार की मांग की है।

भाखड़ा नहर में नहाने गया युवक डूबा

जींद। नरवाना से गुजर रही भाखड़ा ब्रांच नहर पर अपने दोस्तों के साथ नहाने के लिए गया युवक डूब गया। लगभग 18 घंटे बाद भी युवक का कहीं कुछ पता नहीं चल पाया है। युवक नहर के तेज बहाव में बह गया। फिलहाल गोताखोरों को बुला कर डूबे युवक की तलाश की जा रही है। शनिवार को मृतक दिनेश के परिवार के लोगों ने बताया कि गोताखोरों को बुलाया गया है लेकिन अभी तक प्रशासन की तरफ से कुछ खास मदद नहीं मिल पाई है। उनकी मांग है कि जल्द से जल्द दिनेश को ढूंढा जाए। जानकारी के अनुसार मूल रूप से बड़ौदा गांव और हाल आबाद में जींद में बाईपास की कॉलोनी में रहने वाला दिनेश शुक्रवार शाम को अपने चार दोस्तों के साथ नरवाना से गुजर रही भाखड़ा ब्रांच नहर पर नहाने के लिए गया था। बडनपुर के पास नहर पर दोस्तों के साथ नहाने लगा तो वह तेज बहाव में बह गया।

सामाजिक संगठनों ने पुलिस जांच अधिकारियों का आभार जताया

12 वारदातों को अंजाम देने वाले गैंग का पर्दाफाश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कलायत

एसपी आस्था मोदी के अगुवाई में सीआईए द्वारा कलायत व किठाना गांव से संबंधित कुल 12 चोरियों की वारदातों को अंजाम देने वाले गैंग का पर्दाफाश करने पर लोग उत्साहित हैं। यही वजह रही कि शुक्रवार देर रात्रि विभिन्न समाज सेवी संगठन पुलिस प्रशासन जिंदाबाद के नारे लगाते पुलिस स्टेशन पहुंचे। लोगों ने थाना प्रभारी रामनिवास शर्मा के माध्यम से एसपी आस्था मोदी, सीआईए, डीएसपी व पुलिस जांच अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान फूलों का गुलदस्ता भेंट किया गया और मिठाई बांटी। कार्यक्रम में नगर पालिका प्रधान अंकित जैलदार व पूर्व चेयरपर्सन प्रतिनिधि राजू कौशिक भी मौजूद रहे। कहा कि पुलिस द्वारा चोरी की वारदातों के खिलाफ की कार्यवाही से कार्रवाई से शहर में अपराध पर अंकुश लगेगा और नागरिकों में सुरक्षा की भावना मजबूत होगी। दीगर है कि पुलिस अधिकारियों को सम्मान देने पहुंचे लोगों ने कहा कि पिछले कुछ समय से कलायत शहर में लगातार दुकानों में सेंध लगाकर की जा रही चोरियों की वारदातों से हर कोई परेशान रहा है। इस मद्दे को लेकर शहर में प्रदर्शन भी हुए। लेकिन चोरियों रुकने का नाम नहीं ले रही थी। एसपी आस्था मोदी ने शहर में 10 अतिरिक्त सुरक्षा कर्मियों की तैनाती के साथ-साथ व्यवस्था को मजबूती देने के कदम उठाए।

कलायत। थाना प्रभारी रामनिवास शर्मा को सम्मानित करते। *फोटो :हरिभूमि*

चोर गिरोह ने बारह दुकानों को बनाया था निशाना

थाना प्रभारी रामनिवास शर्मा ने इस सफलता का पूरा श्रेय एसपी आस्था मोदी के कुशल नेतृत्व और जन सहयोग को जाता है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार एसपी ने सीआईए टीम को जांच की विशेष जिम्मेदारी सौंपी उससे चोर गिरोह धरा गया। चोर गिरोह ने कलायत थाना क्षेत्र 10 व 2 दुकानों को अपना निशाना बनाया था। चोरी की वारदातों की गुत्थी सुलझ जाने से आम जनता, व्यापारियों और स्थानीय संगठनों ने राहत की सांस ली है।

पाई। अधर में लटका पडा पिलनी का सड़क निर्माण। *फोटो :हरिभूमि*

अधर में लटका सड़क का निर्माण कार्य

पाई। पाई गांव में रिंग बांध के पास पिलनी मार्ग पर सड़क निर्माण का कार्य कुछ समय से अटका हुआ है। उल्लेखनीय है कि कुछ समय पूर्व हलका विधायक सतपाल जाम्बा ने यहीं पर नारियल फोड़कर इस सड़क के निर्माण के उद्घाटन किया था। इस सड़क पर इस जगह मिट्टी डालकर समतल भी बनाए जा चुका है, परंतु अब यह कार्य रुका हुआ है। ग्राम पंचायत सरपंच प्रतिनिधि नरेश ढुल ने बताया कि कुछ लोगों ने उनको बताया है कि इस सड़क की जगह उनके प्लांट है। जिस कारण से इसके निर्माण का कार्य रोकना पड़ा। उन्होंने मार्केटिंग बोर्ड के जेई को बोला है कि वह जल्दी ही प्लाटों की निशानदेही लेकर इसका निर्माण शुरू किया जाए ताकि बाद में बनने के बाद कोई अड़ंगा न आए। उन्होंने ग्रामीणों से भी कहा कि वे भी इसके पास पढ़ने वाले प्लाटों की निशानदेही लेकर निशान लगा ले, ताकि बाद में सड़क बनने पर कोई परेशानी न आए। उन्होंने बताया कि जल्दी ही इसका निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वहीं लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आयः एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्तः एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटीः एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभः एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंगः एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरणः एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

हमला कर युवक को घायल करने पर केस

जींद। गांव खोखरी में रंजिशन हमला कर युवक को घायल करने पर सदर थाना पुलिस ने नौ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। गांव खोखरी निवासी संदीप ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसकी गांव के ही सुनहरा परिवार से रंजिश चली आ रही है। देर शाम को वह खेत से घर लौट रहा था। उसी दौरान सुनहरा परिवार ने उसे घेर लिया।

सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

जींद। डीसी मोहम्मद इमरान रजा ने बताया कि गणतंत्र दिवस पर घोषित किए जाने वाले पुरस्कारों के लिए ऑनलाइन नामांकन करने के लिए 31 जुलाई तक आवेदन किए जा सकते हैं। इन पुरस्कारों में पद्म विभूषण, पद्म भूषण व पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं। उपायुक्त ने बताया कि इन राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए नामांकन अथवा अनुशंसा केवल राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल पर ऑनलाइन ही स्वीकार की जाएंगी।

खिलाड़ी तमन्ना ने जीता कांस्य पदक

जींद। प्रयागराज में हुई 23वीं जूनियर फेडरेशन कप में हिंदू कन्या कालेज की छात्रा तमन्ना ने 400 मीटर दौड़ में कांस्य पदक जीता है। कॉलेज की प्राचार्या डा. पूनम मोर ने खिलाड़ी को बधाई दी। शारीरिक शिक्षा विभाग की प्राध्यापिका डा. मीना ने बताया कि तमन्ना राष्ट्रीय स्तर की बहुत ही बेहतरीन खिलाड़ी है। प्रधान डा. अंशुल व मैनेजमेंट सदस्य व नीलम ने खिलाड़ी के उज्जवल भविष्य की कामना की।

संदिग्ध हालात में मां व बेटा लापता, मामला दर्ज

जींद। गीता कालोनी सफीदों से मां व बेटे के संदिग्ध हालात में गायब होने पर शहर थाना सफीदों पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। गीता कालोनी सफीदों निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि गत दिवस उसकी पत्नी तथा पांच वर्षीय बेटा घर से गायब हो गए। तलाशने तथा पूछताछ करने पर दोनों का कोई सुराग नही लगा।

माह के अंतिम रविवार को दुकानें रहेगी बंद : राणा

राजौद। कपड़ा मार्केट दुकानदारों की मीटिंग प्रधान भीम राणा की अध्यक्षता में फुल्ला सिंह मार्केट में आयोजित की। मेन बाजार व मुख्य मार्ग के सभी तेरह दुकानदारों ने भाग लिया। मीटिंग में सर्व सहमति से निर्णय लिया है हर महीने के अन्तिम रविवार को राजौंद नगर की सभी बिना सिला कपड़े की सभी दुकानें बन्द रहेगी। उन्होने बताया कि हर महीने के अन्तिम रविवार को बिना सिला कपड़े की सभी दुकान बंद रहेगी।

नव नियुक्त सदस्य का व्यक्त किया आभार

कलायत। जिला कष्ट निवारण समिति के नव नियुक्त सदस्य कृष्ण बालू ने भाजपा नेताओं का आभार व्यक्त किया है। कहा कि भाजपा जिला अध्यक्ष ज्योति सैनी, पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक गुर्जर, पूर्व राज्य मंत्री कमलेश ढांडा और संगठन से जुड़े वरिष्ठ नेताओं ने विमर्श कर जिस प्रकार कष्ट निवारण समिति को मजबूती देने के लिए नई टीम दी है उसके सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

डॉ. सूरज प्रकाश की 106वीं जयंती मनाई

गुहला-चीका। शुक्रवार को भारत विकास परिषद के संस्थापक डॉ. सूरज प्रकाश की 106 वीं जयंती पर एक कार्यक्रम का आयोजन हुड्डा कालोनी नंबर 3 चीका के योग केंद्र पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ शहर के प्रमुख उद्योगपति व समाजसेवी सुरजभान सिंगला ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस मौके पर भारत विकास परिषद शाखा चीका के सदस्यों ने डॉ. सूरज प्रकाश को याद किया।

एसपी आस्था मोदी की अध्यक्षता में क्राइम मीटिंग का आयोजन

क्राइम- करप्शन पर जीरो टॉलरेंस की नीति हर हाल में सुनिश्चित करें

बेहतर कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा

स्नैचिंग व चोरी की घटनाओं पर कारगर अंकुश लगाने के लिए सभी अपने अपने क्षेत्र में करें प्रभावशाली गश्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

शनिवार को पुलिस लाइन कैथल में एसपी आस्था मोदी की अध्यक्षता में क्राईम मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग दौरान एसपी द्वारा जिला के सभी डीएसपी, थाना प्रबंधक व चौकी प्रभारियों को उचित दिशा निर्देश दिए गए। इस दौरान एसपी आस्था मोदी ने कहा कि स्नैचिंग व चोरी की वारदातों पर पुर्ण कारगर अंकुश लगाने के लिए सभी अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में पेट्रोलिंग को पूर्ण जागरूकता के साथ करें। बैठक में डीएसपी बीरभान सिंह, डीएसपी कुलदीप बेनीवाल, डीएसपी ललित कुमार, डीएसपी गुरविंद्र सिंह, डीएसपी सुशील प्रकाश, सभी क्राइम युनिट प्रभारी तथा जिला के सभी थाना प्रबंधक व चौकी प्रभारी व अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया बैठक

कैथल। एसपी आस्था मोदी अधिकारियों की बैठक को संबोधित करते।

दौरान एसपी आस्था मोदी ने पुलिस कर्मचारियों व अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी थाना प्रबंधक व डीएसपी सुनिश्चित करें कि उनके अधीनस्थ पुलिस कर्मचारी व अधिकारी संजीदगी पूर्वक कर्तव्यपालना करे, अन्यथा उनके खिलाफ सख्ती बरती जाएगी। काम में रुचि ना लेने वाले अनुसंधान अधिकारियों के खिलाफ कड़ी विभागीय कार्रवाई अमल मे लाई जाएगी, बेहतर कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। क्राइम- करप्शन पर जीरो टॉलरेंस की नीति हर हाल में सुनिश्चित करें। एसपी द्वारा अनुसंधानाधिन चल रहे संगीन मामलों की प्रगती रिपोर्ट हासिल करते हुए सभी थाना प्रबंधकों को उचित दिशा निर्देश दिए गये। एसपी ने कहा कि हमें बेहतर पुलिसिंग के लिए कार्य करना है। अपराध की रोकथाम तथा अपराधियों पर शिकंजा कसने के लिए अपने अपने क्षेत्र में निरंतर गश्त करें। निरंतर रूप से संदिग्ध वाहनो व संदिग्ध व्यक्तियों की जांच करें। आमजन से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें और अपराध और अपराधियों से सख्ती से निपटें। थानों में आने वाली शिकायतों का समय अवधि में निपटारा करें। पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना एवं क्राइम यूनिट प्रभारियों से कहा की नशा के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान में और तेजी लाएं तथा विभिन्न प्रकार के नशा बेचने वालो की जन सहयोग से सूचना प्राप्त कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें तथा मादक पदार्थ तस्करी के मुख्य स्रोत तक शिकंजा कसें। अपराध और अपराधियों खिलाफ शिकंजा कसने के लिए नए लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें पूरा करें। कोई भी जघन्य अपराध घटित होने पर समय रहते साइबर सैल की समुचित सहायता प्राप्त करके शीघ्रातिशीघ्र अभियोग को सुलझाने का प्रयास करें। एसपी ने सभी थाना प्रबंधकों व चौकी प्रभारियों को निर्देश देते हुए कहा कि पुलिस द्वारा पीओ, बेल जंपर, पैरोल जंपर व अवैध असला-अमुनेशन बरामद करने के लिए विशेष अभियान चलाकर इस प्रकार के अधिकाधिक अपराधियों को पकडक़र मुहीम को सफल बनाएं। इसके अतिरिक्त एसपी ने कहा कि आमजन से संपर्क स्थापित करके आमजन को नशा ना करने बारे, साइबर अपराध बारे, ट्रैफिक नियमों की पालना करने बारे जागरूक करें।

जाट स्कूल के 44 कैडेट्स ने लिया 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

हरियाणा बटालियन कुरुक्षेत्र एनसीसी का 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर कैंप कमांडिंग ऑफिसर कर्नल हरप्रीत सिंह कि अध्यक्षता में 18 से 27 जून तक जवाहर नवोदय विघालय, निवारसी में संपन्न हुआ। शिविर में जाट वमावि के 44 कैडेट्स व अधिकारी मुनीश ने भाग लिया। प्रधानाचार्य पंकज गुप्ता ने बताया कि विद्यालय में पिछले वर्ष एनसीसी यूनिट की शुरुआत की थी। ये कैडेट्स का पहला प्रशिक्षण शिविर था। अधिकारी मुनीश के नेतृत्व में कैडेट्स ने कैंप में एकता, अनुशासन,आपदा प्रबंधन, साइबर क्राइम से बचने के तरीके, ड्रिल, हथियार चलाना, प्राथमिक चिकित्सा, मानचित्रण, और सेना में बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण जैसे विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके अलावा खेल प्रतियोगिताओं व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कैडेट्स ने भाग लेकर पदक जीते। जाट हाई स्कूल एजुकेशन सोसाइटी के प्रधान राजकुमार ने कहा कि हमें राष्ट्र प्रथम के उद्घोष को जीवन में उतारना है तथा एनसीसी द्वारा ये कार्य प्रभावी ढंग से किया जा रहा है। सभी एनसीसी अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उप-प्रधान बलविंदर सिंह बनवाला , महासचिव रश्मि ढुल व कोषाध्यक्ष बलकार नैन व कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते उन्हें आशीर्वाद दिया।

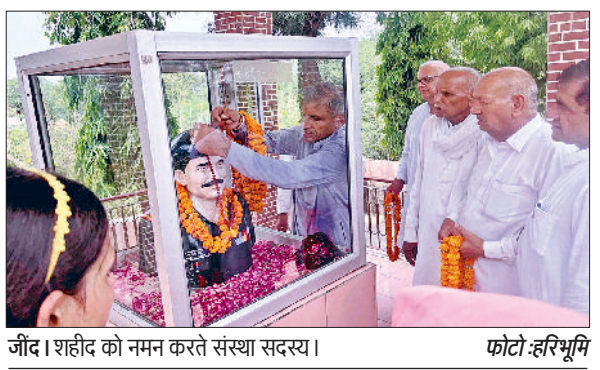

जींद। शहीद को नमन करते संस्था सदस्य। *फोटो :हरिभूमि*

शहीद सूबेदार रणधीर सिंह को दी श्रद्धांजलि

जींद। मैढ सुनार सभा द्वारा गांव लुदाना में शहीद सूबेदार रणधीर सिंह वर्मा के शहीदी दिवस पर शनिवार को श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन कर शहीदों की शहादत को याद किया गया। सभा के प्रधान सत्यनारायण की अगुवाई में सभा के पदाधिकारियों व गणमान्य लोगों ने शहीद सुबेदार रणधीर सिंह वर्मा की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इससे पूर्व सभा के पदाधिकारियों ने शहीद के परिवारजनों के साथ यज्ञ करके देश व प्रदेश में सौहार्द एवं सुख शांति की कामना की और युवाओं को देश सेवा के लिए शपथ दिलाई। इसके अलावा शहीद स्मारक पर पौधारोपण करके पर्यावरण स्वच्छ रखने का संकल्प लेते एक पेड़ मां के नाम से अभियान की शुरूआत की। गौरतलब है कि दौ जनवरी 1960 को लुदाना मे प्रभूराम वर्मा के घर जन्मे रणधीर सिंह वर्मा 28 जून 2006 को सेवानिवृति से मात्र चार माह पूर्व जम्मू-कशमीर के बारामूला मे पाक उग्रवादियों से लोहा लेते शहीद हो गए थे और शहीद होने से पूर्व बहादुरी का परिचय दिया।

दयानंद मित्तल अग्रवाल समाज के अध्यक्ष बने

जींद। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े और लंबे समय से समाजसेवा में सक्रिय समाजसेवी दयानंद मित्तल को एक बार फिर अखिल भारतीय अग्रवाल समाज खंड उचाना का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। यह नियुक्ति प्रदेश अध्यक्ष डा. राजकुमार गोयल के दिशा-निर्देश में जिला खंड प्रभारी सावर गर्ग द्वारा की गई है। प्रदेश संगठन की ओर से दयानंद मित्तल को निर्देश दिए गए हैं कि वे एक सप्ताह के भीतर अपनी कार्यकारिणी का गठन करें और समाजहित में योजनाबद्ध ढंग से कार्य प्रारंभ करें। उनकी नियुक्ति पर अग्रवाल समाज सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों ने प्रसन्नता व्यक्त की है। दयानंद मित्तल ने कहा कि वे समाज द्वारा सौंपी गई इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा, समर्पण और पारदर्शिता के साथ निभाएंगे। उनका उद्देश्य समाज को संगठित करते हुए सेवा, सहयोग और विकास के कार्यों को गति देना रहेगा।

एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

कैथल। दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान के द्वारा आर के एसडी कालेज प्रो कालोनी कैथल में एक दिवसीय "संस्कार शाला" का आयोजन किया गया। मंथन संपूर्ण विकास केंद्र संस्थान की ओर से चलाया गया ऐसा क्रांतिकारी प्रकल्प है जो भावी पीढ़ी को आध्यात्मिक, सामाजिक एवं बौद्धिक स्तर पर पोषित करने के लिए कटिबद्ध है। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों एवं युवाओं में नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक चेतना, और भारतीय सांस्कृतिक विरासत को पुनः जाग्रत करना है। आज के युग में जहाँ आधुनिकता के प्रभाव से जीवनशैली में गिरावट आई है, वहाँ संस्कार शाला जैसे कार्यक्रम मृतप्राय हो चुके नैतिक मूल्यों के लिए संजीवनी की तरह कार्य कर रहे हैं। संस्कार शाला में उपस्थित अभिभावकों को संबोधित करते साध्वी बहन जी ने कहा कि प्रत्येक बालक की एक स्वाभाविक प्रतिभा होती है और उस प्रतिभा को अनदेखा करके बालक को किसी और क्षेत्र में प्रवृत्त करना ही माता पिता की सबसे बड़ी भूल है। क्योंकि ये आवश्यक नहीं है कि जो बालक पढ़ाई में अच्छा नहीं है तो वह सफलता की प्राप्ति नहीं कर सकता है।

कैथल। कार्यशाला के दौरान युवा व पदाधिकारी। *फोटो :हरिभूमि*

गुहला चीका। सोनू कालड़ा को माला पहनाते व्यापारी। *फोटो :हरिभूमि*

सर्वसम्मति से सोनू प्रधान बने

गुहला चीका। सब्जी मंडी आढ़ती एसो, चीका की वार्षिक बैठक मंडी के शेड के नीचे बड़े ही उत्साहपूर्ण माहौल में आयोजित की, जिसमें तीन दर्जन से अधिक आढ़तियों ने भाग लिया। सर्वसम्मति से सोनू कालड़ा को तीसरी बार एसो का प्रधान चुना गया। सोनू कालड़ा के नाम का प्रस्ताव वरिष्ठ आढ़ती बलवान ठाकुर द्वारा किया गया, जिसका समर्थन अनुभवी आढ़ती सरवन और बलबीर सिंह ने किया। सभी आढ़तियों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रस्ताव को स्वीकृति दी। उल्लेखनीय है कि एसो का चुनाव हर वर्ष होता है और सोनू लगातार पिछले दो वर्षों से संगठन के प्रधान चुने जा रहे हैं। बैठक के दौरान आढ़तियों ने सोनू के बीते कार्यकाल की सराहना करते कहा कि उन्होंने न केवल आढ़तियों की समस्याएं समय पर सुलझाईं, बल्कि मंडी के विकास कार्यों में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

गांव ढांडा खेड़ी में जागरूक कार्यक्रम

जींद। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दरियावाला के तहत ढांडा खेड़ी गांव में स्वास्थ्य कर्मियों ने सभा का आयोजन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या एक अपराध पर जागरूक करना है। एमपीएचडब्ल्यू सुनीता कुमारी व सुशील शर्मा ने कहा कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ एक ऐसी पहल है, जिसका उद्देश्य समाज में बेटियों के प्रति भेदभाव को दूर करना और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। यह पहल न केवल बेटियों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए है बल्कि उन्हें समान अवसर प्रदान करने और उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए भी है। समाज में बेटियों के प्रति भेदभाव एक गंभीर समस्या है। बेटियों को अक्सर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रखा जाता है और उन्हें समाज में समान अवसर नहीं दिए जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप बेटियों का भविष्य अंधकारमय हो सकता है। बेटा व बेटी में कोई फर्क नही करना चाहिए। लड़कों की तरह लड़कियों को भी शिक्षा देनी चाहिए। आज हर फील्ड में लड़कियां आगे हैं।

जींद। कन्या भ्रूण हत्या न करने की शपथ लेते हुए। *फोटो :हरिभूमि*

मुख्यमंत्री नायब सैनी से मुलाकात के दौरान युवा नेता अमित सैनी।

प्रदेश में एक समान विकासः अमित

पूंडरी। युवा भाजपा नेता अमित सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में सकारात्मक बदलाव की नई इबारत लिखी जा रही है। चंडीगढ़ में मुख्यमंत्री से मुलाकात करने के पश्चात यहां बातचीत मे उन्होंने कहा कि आज हरियाणा में भय, भूख और भ्रष्टाचार के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ी जा रही है और भाजपा सरकार इसके समूल खात्मे के लिए पूरी तरह कृतसंकल्प है। अमित सैनी ने विश्वास जताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार जातिगत भेदभाव और क्षेत्रवाद की राजनीति से ऊपर उठकर समान विकास के रास्ते पर अग्रसर है। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प को पूरा करने के लिए सरकार पूरी प्रतिबद्धता से काम कर रही है। कहा भाजपा की नीति 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' को धरातल पर उतारने के लिए हमारी सरकार योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रही है। युवाओं को रोजगार, किसानों को सम्मान और महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए योजनाएं तेजी से लागू की जा रही हैं।

नरवाना। कार्यक्रम को संबोधित करते मंत्री बेदी। *फोटो :हरिभूमि*

संत महापुरुष सर्व समाज के आदर्श

नरवाना। हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा कि संत महापुरुष किसी विशेष जाती वर्ग तक सीमित नहीं होते बल्कि सर्व समाज के आदर्श होते हैं भारत भूमि आदिकाल से ही साधू संतए संन्यासी तपस्वियों एवं महापुरुषो की जननी रही है और समय.समय पर अनेक संत महापुरुषों ने भारत के साथ साथ पूरी दुनिया को समरस्ताए समानता तथा सोहार्द का संदेश दिया है। संतों की वाणी से सर्व समाज का? कल्याण का रास्ता प्रशस्त होता है। मंत्री कृष्ण कुमार बेदी शनिवार को एल आई सी रोड पर स्थित बाल्मीकि भवन में संत कबीर की 628वी जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित प्रकट उत्सव में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि संत कबीर का नाम संत महापुरुषों में अग्रणी पंक्ति में आता है जोकि उनके दोहों में साफ झलकता हैएजात ना पूछो संत की पुछो उसका ज्ञानए कबीरा खड़ा बाजार मेंए मांगे सबकी खैरएना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर।

पौधरोपण कर दिया पर्यावरणा बचाने का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| उचाना

उचाना मंडल भाजपा महामंत्री रमेश राणा की अगुवाई में पौधरोपण अभियान के तहत विभिन्न जगहों पर भाजपा उचाना मंडल पदाधिकारियों ने पौधरोपण किया। उचाना खुर्द बाबा फुल्लू साध गौशाला, नागरिक अस्पताल उचाना परिसर में पौधरोपण करके पर्यावरण बचाने का संदेश दिया। रमेश राणा ने कहा कि जुलाई माह में बारिश का आगमन हो जाता है। ये माह पौधरोपण करने का सबसे उपयुक्त माह होता है। इस माह में पौधरोपण अधिक से अधिक करने चाहिए। पर्यावरण को हमें दूषित होने से बचाना है तो सबको मिल कर पौधरोपण करना होगा। परिवार में किसी भी तरह की खुशी हो तो पौधरोपण जरूर करें। पौधरोपण करने के बाद निरंतर उसकी देखभाल करें। पौधरोपण करने से ही हमारा दायित्व पूरा नहीं होता बल्कि हमारी जिम्मेदारी पौधे पर समय पर पानी देने एवं देखभाल करने की बढ़ जाती है। इस मौके पर डा. सुशील गर्ग, डा. राजेश मित्तल, सत्यवान कौशिक, मुकेश डाहोना खेड़ा, सौरभ अत्री, संदीप छात्तर, सुनील मांडी, मुकेश, अनूप, दिनेश, धर्मबीर मौजूद रहे।

उचाना। नागरिक अस्पताल में किया गया पौधरोपण। *फोटो :हरिभूमि*

उचाना। अखंड ज्योत को रवाना करते पुजारी रामनिवास। *फोटो :हरिभूमि*

बनभौरी धाम से श्रद्धालु लेकर आए अखंड ज्योत

उचाना। देव भूमि बनभौरी माता श्यामरी धाम से श्रद्धालु पैदल अखंड ज्योत लेकर उचाना आए। माता श्यामरी धाम पुजारी रामनिवास पुजारी द्वारा अखंड ज्योत के जत्थे को रवाना किया। विकास मखंड की अगुवाई में माता के भगत माता श्यामरी धाम पहुंचे। पुजारी रामनिवास ने कहा कि गुप्त नवरात्रि शुरू हो चुके है। गुप्त नवरात्रि में माता की पूजा अर्चना करने से मनोकामना माता पूरी करती है। गुप्त नवरात्रि में की गई पूजा का अपना महत्व है। प्रदेश ही नहीं बल्कि आस.पास के राज्यों से भी श्रद्धालु माता की पूजा.अर्चना करने मंदिर पहुंचे है। विकास मंखड ने बताया कि उचाना से माता श्यामरी धाम 17 किलोमीटर है। माता के धाम से उचाना तक श्रद्धालु माता के जय कारे लगाते हुए अखंड ज्योत लेकर आए। माता के गीतों पर श्रद्धालु झूमे। अखंड ज्योत लेकर आने के साथ.साथ जो साथ में चलते है उनको भी पुण्य का लाभ मिलता है माता उनकी मनोकामना पूरी करती है।

अशरफगढ़ में मनरेगा के तहत चल रहे तालाब खुदाई के कार्य का निरीक्षण

जल संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

ग्रामीण विकास मंत्रालय के संयुक्त निदेशक पंकज यादव के मार्ग दर्शन में पंहुची टीम ने अपने दौरे के तीसरे दिन शनिवार को अशरफगढ़ गांव में जाकर मनरेगा द्वारा चल रही तालाब की खुदाई कार्य को देखा। उन्होंने कहा कि समय-समय पर ताालबों की गाद निकालना भी जल संरक्षण की श्रेणी में आता है। तालाबों से चिकनी मिट्टी की परत हटाकर उसके पानी संचय की क्षमता बढ़ जाती है। इस अवसर पर उनके साथ सिंचाई विभाग के कार्यकारी अभियंता विकास गिरधर, मनरेगा से परियोजना अधिकारी राकेश कुमार, कनिष्ठ अभियंता सिंचाई विभाग प्रदीप कुमार समेत अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर ग्रामीण विकास मंत्रालय से पंहुचे विजय भारती ने कहा कि जल संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है और जल संरक्षण का कार्य जल प्रबंधन के द्वारा ही संभव है। उन्होंने जल संरक्षण की आवश्यकता, बढ़ते जल संकट, जल के दुरूपयोग और संभावित समाधानों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने वर्षा जल संचयन, टपका सिंचाई प्रणाली, जलाशयों का संरक्षण और पौधारोण जैसे उपायो पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को इसमे सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। जल ही जीवन का आधार है और इसका संरक्षण करना हम सभी की जिम्मेदारी भी है। इसके बाद उन्होंने डीआरडीए के सभागार में पहुंच कर स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को भी जल संरक्षण को लेकर अपील की। उन्होंने कहा कि रशोई व घर के कार्यों के लिए प्रयोग करने वाले जल को कैसे बचाया जा सके। इसके लिए महिलाओं से बेहतर कोई नही जानता। उन्होंने कहा कि कपड़े, बर्तन, घर आंगन की साफ.-सफाई जैसे कार्यों के लिए हमें ऐसे उपाय करने चाहिए जिसमें कि कम से कम पानी का उपयोग हो सके।

जींद। सभागार में पहुंची स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं। *फोटो :हरिभूमि*

उचाना। अभियान के तहत सदस्य बनाते जजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता।

जजपा ने चलाया सदस्यता अभियान

उचाना। जजपा द्वारा शुरू किए गांव-गांव सदस्यता अभियान के तहत जिलाध्यक्ष जोरा सिंह डूमरखा की अगुवाई में उचाना हलके के विभिन्न गांव के दौरे किए। डूमरखा खुर्द, तारखां, काब्रच्छा, सुदकैन कलां, लोधर, मांडी सहित विभिन्न गांवों में जाकर सदस्यता अभियान के तहत सदस्य बनाए गए। जोरा सिंह डूमरखां ने कहा कि जजपा सदस्यता अभियान को लेकर लोगों में उत्साह नजर आ रहा है। सदस्यता अभियान जिले में जोर-शोर से चल रहा है। पूर्व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला युवा, मजदूर, किसान, व्यापारी की आवाज है तो बुजुर्गों का विश्वास वो है। सत्ता में रहते हुए बुढ़ापा पेंशन में निरंतर बढ़ोतरी हुई तो किसानों को उनकी फसल के दाम फसल बिकने के 72 घंटे के बाद मिले तो आढ़तियों को उनकी आढ़त समय पर मिली। आज फसल के सीजन में किसान, आढ़ती दोनों परेशान रहे तो बुजुर्गों की पेंशन में अब तक बढ़ोतरी नहीं हुई है।

खबर संक्षेप

बिजली के रेट बढ़ाकर जनता की जेब पर डाका

राजौंद। बैकवर्ड सेल के कैथल जिला के अध्यक्ष सोनू वर्मा ने बताया कि हरियाणा सरकार ने बिजली के रेट बढ़ाकर आम जनता की जेब पर डाका डालने का काम किया हैं। अगर 30 जून तक बिजली के बड़े हुए रेट कम ना हुए तो इनेलो अध्यक्ष चौ.अभय सिंह चौटाला व प्रदेश अध्यक्ष चौधरी रामपाल माजरा की अध्यक्षता में 1 जुलाई को शक्ति भवन सेक्टर-6,पंचकूला में इनेलो पार्टी की ओर से जोरदार प्रदर्शन कर भाजपा सरकार के झूठे वायदों की पोल खोलने का काम करेंगे।
उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने सिर्फ महंगाई बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है । उन्होंने कहा कि रोजगार न मिलने के कारण युवा विदेश में जा रहे हैं और अब बिजली के रेट में बढ़ोतरी कर भाजपा सरकार ने आम जनता की जेब पर डाका डालने का प्रयास किया है।

गर्मी के बावजूद धान रोपाई का कार्य जोरों पर

राजौद। गर्मी के बावजूद किसानों ने धान की रोपाई का कार्य शुरू कर दिया है। कई दिन पूर्व हुई बरसात भले ही कुछ स्थानों पर हुई थी, लेकिन बरसात के तुरंत बाद ही किसानों ने धान रोपाई के कार्य को तेज कर दिया है। दो दिन से पड़ रही भयंकर गर्मी की वजह से धान की पनीरी व खेत तैयार होने के बावजूद भी किसान धान की रोपाई कार्य में लगे हुए है। किसान नरेंद्र, सुभाष, अशोक कुमार, रामकुमार, राजेश, शमशेर, कर्ण सिंह, धर्म सिंह, कुलदीप ने बताया कि भले ही गर्मी पूरा तांडव दिखा रही है। लेकिन गर्मी के साथ साथ धान की पनीरी व खेत दोनों तैयार है। जिसके चलते किसानों को धान की रोपाई का कार्य शुरू करना पड़ रहा है। किसानों को उम्मीद है कि जब तक मानसून प्रदेश में आएगी तो उनकी धान की फसल भी बढ़वार लेना शुरू कर देगी।

पुण्यतिथि पर निःशुल्क मेडिकल कैंप 4 को

पूंडरी । सेवा, स्नेह और सद्भाव की प्रतिमा रहीं स्व. स्वदेश चोपड़ा जी की पुण्य स्मृति में 4 जुलाई 2025 (शुक्रवार) को एक विशाल निःशुल्क मेडिकल चेकअप कैंप का आयोजन किया जा रहा है। यह कैंप ओम मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल एंड ट्रॉमा सेंटर, फतेहपुर-पूंडरी की ओर से आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्यातिथि विधायक सतपाल जांबा होंगे।

गांव सांच के खेल मैदान में बच्चों से मिले सतपाल

पूंडरी। भाजपा विधायक सतपाल जांबा ने गांव सांच के खेल मैदान में बच्चों से मुलाकात की और उनके साथ समय बिताया। इस मौके पर उन्होंने युवाओं की खेलों के प्रति रुचि को सराहते हुए कहा कि खेल न केवल शारीरिक विकास का माध्यम हैं, बल्कि यह आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना भी सिखाते हैं। विधायक सतपाल जांबा ने भरोसा दिलाया कि क्षेत्र के युवाओं को बेहतर खेल सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हर गांव में बच्चों को खेलों के लिए एक बेहतर माहौल और आवश्यक संसाधन मिलें, ताकि वे स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं।

भारत लैंगिक समानता अनुपात के मामले में सबसे निचले स्थान पर : सुभाषिनी अली सहगल

जींद। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति द्वारा शनिवार को 12वें हरियाणा राज्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन का आयोजन किया गया। अधिवेशन में मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व सांसद, राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्या स्वतंत्रता कैप्टन लक्ष्मी सहगल की बेटी सुभाषिनी अली सहगल, जनवादी महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष, केरल की पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्री एपीके श्रीमती तथा अंतरराष्ट्रीय वॉलीवॉल खिलाड़ी तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. जगमती सांगवान रही। मुख्य वक्ताओं ने अधिवेशन को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार अपने आप को महिलाओं की सबसे बड़ी हितैषी के तौर पर प्रस्तुत कर रही है। वह दावा कर रही है कि महिलाओं के लिए जो योजनाएं शुरू की गई हैं।

छात्र आदित्य ने पाया प्रदेश में तीसरा स्थान रिचेकिंग के साथ ही बदला स्थान

कैथल। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी में सरस्वती पब्लिक स्कूल सेगा के छात्र आदित्य चहल ने दसवीं कक्षा में प्रदेश में तीसरा स्थान हासिल किया है। बता दें कि आदित्य चहल को यह स्थान रिचेकिंग के बाद मिला है। जहां पूर्व में उनके नंबर 485 थे तो वहीं अब रिचेकिंग के बाद उनके नंबर बढकर 495 हो गए हैं। 495 अंकों के साथ अब आदित्य प्रदेश के तीसरे नंबर हासिल करने वाले बन गए हैं। चहल ने इसका श्रेय माता-पिता, स्कूल के मेहनती और कर्मठ अध्यापकों को दिया। स्कूल के प्रबंध निदेशक मेहर सिंह चहल ने बताया कि स्कूल के ही अन्य छात्र अश्वनी ने 494 अंक प्राप्त कर प्रदेश में चौथा स्थान प्राप्त किया स्कूल व जिला का नाम रोशन किया है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हुड्डा कॉम्पलेक्स, डी.आर.डी.ए. के सामने, जीन्द
हरिभूमि कार्यालय, करनाल रोड, जाट स्टेडियम के सामने, कैथल
फोन : 8295157800, 8814999186, 8814999166, 9253681005

कलायत, खरक पांडवा, रामगढ़ पांडवा व आसपास के गांवों के खेत बिना पानी के प्यासे

खटाई में पड़ी सुदकैन डिस्टीब्यूट्री कंकरीटकरण की योजना

कलायत। योजना कार्य में बड़ी चूक के कारण कपिल मुनि माइनर को नहीं मिल रहा पानी व कलायत शहर व कई गांवों के किसानों में हाहाकार धान एवं विभिन्न फसलों पर पड़ रही सूखे की मार।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कलायत

करोड़ों रुपये बजट की सुदकैन डिस्टीब्यूट्री कंकरीटीकरण योजना लोकार्पण से पहले ही कलायत शहर व ग्रामीण अंचल के हजारों एकड़ कृषि रकबे के लिए बड़ी आफत बन कर खड़ी हो गई है। किसानों के अनुसार डिस्टीब्यूट्री से पानी इस कदर तेजी से बह रहा है कि इसके हैड से कपिल मुनि माइनर को पानी ही नहीं मिल पा रहा। परिणामस्वरूप कलायत, खरक पांडवा, रामगढ़ पांडवा, चौशाला व आसपास के कई गांवों के खेत बिना पानी के प्यासे हैं। इस स्थिति से जाहिर है कि योजना निर्माण कार्य में बड़ी चूक है। इससे किसानों के सामने भूखा मरने की नौबत पैदा होगी। क्योंकि यदि डिस्टीब्यूट्री से संबंधित निर्माण योजना की सिरे से जांच करते समस्या को दूर नहीं किया गया तो धान व अन्य फसलों की पैदावार इस बार नहीं ली जा सकेगी। जबकि राष्ट्र के साथ-साथ अंरराष्ट्रीय स्तर पर चावल की मांग पूरा करने में कलायत क्षेत्र की बड़ी भूमिका है। इस मुद्दे को लेकर शनिवार को दिन भर बालू गांव की सीमा पर स्थित कपिल मुनि माइनर हैड पर किसानों की बैठक चली। सर्व सम्मति से किसानों ने वैकल्पिक व्यवस्था के लिए अस्थायी बांध बनाकर पानी को माइनर में पहुंचाने का प्रयास किया। लेकिन अभियान सफल नहीं हो पाया। इसके चलते किसानों ने जिला मुख्यालय तक मार्च निकालते हुए प्रशासन को स्थिति से अवगत करवाने का निर्णय लिया। नाजुक स्थिति की जानकारी मिलते ही सिंचाई विभाग एसडीओ अखिल कौशिक व उनकी टीम मौके पर पहुंची। अधिकारी इस प्रयास में लगे हैं कि समस्या का समाधान हो। जयपाल, विक्रम, बलिंद्र, नन्हा, जयप्रकाश, विक्की व दूसरे प्रभावित किसानों ने बताया कि करोड़ों रुपए सुदकैन डिस्ट्रीब्यूट्री कंकरीटीकरण योजना कार्य पर व्यय किए जा रहे हैं। उम्मीद थी कि सूखे खेतों को पानी मिलेगा। किसान की पैदावार बढ़ेगी और घाटा को मुनाफे में तबदील किया जा सकेगा। लेकिन सपने बिखरते नजर आ रहे हैं। योजना पूरी होने के बाद भी खेतों तक पानी नहीं पहुंच पा रहा। जिससे हजारों एकड़ रकबा प्यासा पड़ा है। आरोप है कि डिस्ट्रीब्यूट्री के कंकरीटीकरण में कई स्तरों पर लापरवाही बरती गई।

समस्या का हल होगा: कौशिक

कलायत उपमंडल सिंचाई अभियंता अखिल कौशिक ने बताया कि सदुकैन डिस्टीब्यूट्री से कपिल मुनि माइनर में पानी न आने की समस्या उनके संज्ञान में आई है। वे टीम के साथ मौका स्थल पर पहुंचकर स्थिति का मुआयना कर रहे हैं। विभाग वे तमाम प्रयास करेगा जिससे कपिल मुनि माइनर के जरिये किसानों के खेतों को पानी मिले।

जींद। जच्चा व बच्चा के साथ डा. राशि। फोटो : हरिभूमि

डा. राशि की मेहनत ने मोनिका को दी बिटिया के रूप में खुशियां

- महिला के पेट में ओवरनाल थी नीचे, जच्चा व बच्चा की जान को था खतरा
- जच्चा और बच्चा को बचाने के लिए टीम ने चैलेंज के तौर पर किया काम : डॉ. राशि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

जिला मुख्यालय स्थित नागरिक अस्पताल में ऐसे तो चिकित्सकों की कार्यशैली हमेशा सुर्खियों में रहती है लेकिन चिकित्सक भी ऐसा काम कर देते हैं कि लोगों की नजर में वो भगवान स्वरूप ही नजर आते हैं। ऐसा ही किया गायनी चिकित्सक डा. राशि ने। डिलीवरी के लिए आई महिला की हालत ठीक नही थी। महिला के पेट में ओवरनाल नीचे थी। जिसके कारण बच्चा और मां की जान को था खतरा था। ऐसे में डा. राशि ने गंभीरता को समझा और बच्चे और मां की जान को खतरा देख अपने आप ही गर्भवती महिला को स्ट्रेचर पर लेकर आप्रेशन की तरफ दौड़ी और समय रहते एक सफल आप्रेशन किया। जिससे अब जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। महिला ने एक स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया है। अगर डलवरी के दौरान कोर (ओवरनाल) बाहर आ जाती तो जच्चा और बच्चा दोनों की जान को खतरा हो सकता था। ऐसे में डा. राशि के इस कार्य की चंहुओर प्रशंसा हो रही है। बुधवार को डिलवरी के लिए गांव अनुपगढ़ की 26 वर्षीय मोनिका को अस्पताल लाया गया था। तब परिजनों को पता चला कि डिलीवरी से पहले और ओवरनाल दिखाई दे रही है। जिस से परिजन घबरा गए। ऐसे में डा. राशि, डा. मृत्युंज्य व अन्य चिकित्सकों व स्वास्थ्यकर्मियों ने डिलीवरी करवाने आए मोनिका के परिजनों को ढांढस बंधाया। गायनी डा. राशि ने अपने सहयोगियों के साथ तुरंत प्रभाव से आप्रेशन किया।

टीम ने चैलेंज के तौर पर किया काम : डा. राशि

गायनी डा. राशि ने बताया कि जच्चा और बच्चा को बचाने के लिए टीम ने पूरे चैलेंज के साथ काम किया और दोनों को सुरक्षित बचा लिया गया। गर्भवती महिला के पेट में ओवरनाल नीचे थी। जिसके कारण बच्चा और मां की जान को था खतरा था। ऐसे में सावधानीपूर्वक आप्रेशन किया गया। अब जच्चा और बच्चा दोनों सेफ हैं। नागरिक अस्पताल में सुविधाओं की कोई कमी नही है और कोई भी स्पताल में गर्भवती महिला की डिलीवरी करा सकता है।

लेडी आइपीएस स्मिति के निधन पर जताया शोक

- कैथल के गांव गढी में हैं स्मिति चौधरी का ससुराल
- मां रह चुकी हैं कैथल की डीसी

- साल 1998 में दोनों की अरेंज मैरिज हुई थी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

हरियाणा की लेडी आइपीएस अधिकारी स्मिति चौधरी का कल महाराष्ट्र में बीमारी के कारण निधन हो गया। वह अपने पति महाराष्ट्र पुलिस में आइजी राजेश कुमार के पास नासिक में गई हुई थीं। यहीं अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। स्मिति के पति राजेश कुमार कैथल के गढ़ी गांव के रहने वाले हैं। साल 1998 में दोनों की अरेंज मैरिज हुई थी। तब स्मिति की मां जयवंती श्योकंद कैथल की डीसी होती थीं। उस समय कैथल का डीसी आवास नहर कालोनी में होता था। उनके आवास पर ही शादी हुई थी। तब पूरे गांव को न्योता दिया गया था। बड़े अधिकारी और राजनेता भी शादी में शामिल हुए थे। शादी के बाद स्मिति और राजेश के दो बच्चे हुए। दोनों महाराष्ट्र में ही पिता के पास रह रहे हैं। बड़ी बेटी एमबीबीएस की पढ़ाई कर रही है। जबकि बेटा अभी स्कूल में है। उनके ससुराल गांव गढ़ी में परिवार के दूसरे लोगों को उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी।

ससुर कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी में लाइब्रेरियन रहे

रिश्ते में स्मिति के जेठ लगने वाले बदन सिंह ने बताया कि स्मिति चौधरी के ससुर यानी राजेश के पिता दीनानाथ कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी में लाइब्रेरियन रहे हैं। तभी से उन्होंने अपने बच्चों की परवरिश बेहतर से बेहतर करने के बारे में सोच लिया था। स्मिति की सास चंद्रपति हाउस वाइफ थीं। करीब चार साल पहले दीनानाथ का निधन हो गया। इनके दो साल बाद चंद्रपति भी चल बसीं।

पति के भाई नूंह में जिला पंचायत अधिकारी

राजेश के एक और भाई राकेश हैं, जो इस समय नूंह में जिला पंचायत अधिकारी (डीडीपीओ) के तौर पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। स्मिति और राजेश की नौकरी शुरू से शहर से बाहर रही है। इसलिए दोनों हमेशा बाहर ही रहे हैं। वह कभी-कभी पारिवारिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए ही गांव आते हैं। गांव में उनका व्यवहार काफी मिलनसार रहा। इनकी एक कोठी मोहाली के आइपीएस हैं। जयपाल पंजाब पुलिस में तैनात थे। उनका निधन हो चुका है। जस्सू पहलवान यमुनानगर में एएसआइ तैनात हैं। गांव में राजेश के परिवार की काफी इज्जत है। अगर गांव में कोई विवाद होता है तो सुलह करवाने के लिए परिवार तत्पर रहता है।

राजेश के भतीजे पहलवान रहे

राजेश के रिश्ते में भाई लगने वाले जगदीश ने बताया कि राजेश के भतीजे ऑल इंडिया लेवल के पहलवान रहे

बच्चों ने कौशल का उठाया भरपूर आनंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| पूंडरी

श्वेता रॉयल पब्लिक स्कूल, फतेहपुर पूंडरी में दिनांक 26 से 30 जून तक ग्रीष्मकालीन शिविर का शानदार आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने भरपूर उत्साह और ऊर्जा के साथ भाग लिया। यह कैंप न सिर्फ विद्यार्थियों के लिए मनोरंजन और आनंद का माध्यम बना, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास का भी उत्कृष्ट अवसर साबित हुआ। शिविर के दौरान छात्रों को विभिन्न सहगामी गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला, जिनमें तैराकी, सुलेखन (कैलीग्राफी), आर्ट एंड क्राफ्ट, वेस्ट मटीरियल से क्रिएटिव आइटम्स बनाना, इंडोर गेम्स, नृत्य, इंग्लिश स्पीकिंग और व्यक्तित्व विकास प्रमुख रहीं। इन गतिविधियों ने बच्चों के आत्मविश्वास, रचनात्मकता और सामाजिक कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कैंप में विद्यार्थियों ने अध्यापकों के मार्गदर्शन में सुंदर-सुंदर कलाकृतियाँ तैयार कीं, जिन्हें विद्यालय के सूचना पट पर प्रदर्शित किया गया। इन प्रदर्शनों ने सभी को आकर्षित किया और बच्चों के भीतर छुपी प्रतिभा को उजागर किया। विद्यालय प्रबंधन की ओर से बताया गया कि इस प्रकार के कैंप बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ जीवन कौशल, आत्म-अनुशासन और रचनात्मकता के विकास में मदद करते हैं। विद्यालय की प्रधानाचार्य ने सभी बच्चों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की।

श्वेता स्कूल में ग्रीष्मकालीन शिविर में तैराकी करते बच्चे। फोटो : हरिभूमि

मौसमी बीमारियों से बचाव को स्वास्थ्यकर्मियों ने चलाया जागरूकता अभियान

जींद। स्वास्थ्य विभाग द्वारा लोगों को बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए शहर में नुक्कड बैठकें कर लोगों को जागरूक करने का किया गया। सिविल सर्जन डा. सुमन कोहली के मागदर्शन में स्वास्थ्य कर्मियों ने शनिवार को जहां शहर में की दर्जनभर कालोनियों में नुक्कड़ बैठकें करने के अलावा झुग्गी झोपडियों में घर-घर जाकर लोगों को मच्छरजनित रोगों तथा डायरिया, उल्टी दस्त जैसी बीमारियों से बचाव की जानकारी दी और घरों के कूलरों व पानी की टंकियों की जांच भी की। इस दौरान स्वास्थ्यकर्मियों ने ओआरएस, जिंक तथा क्लोरीन की गोलियां भी वितरित की। घर-घर किए सर्वे के दौरान बुखार से पीड़ित 32 मरीजों के खून के सैंपल लेकर जांच के लिए लैब में भी भिजवा गए। जागरूकता अभियान का निरिक्षण करने पहुंचे जिला स्वास्थ्य निरिक्षक राममेहर वर्मा ने बताया कि जून माह को मलेरिया रोकथाम के रूप मे मनाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

दबलैन की आंगनवाड़ी में महिलाओं की मीटिंग, निकाली जागरूकता रैली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नरवाना

गांव दबलैन की आंगनवाड़ी केंद्र में शनिवार को महिला सशक्तिकरण और जन.जागरूकता को लेकर एक विशेष मीटिंग का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आंगनवाड़ी वर्कर्ए आशा वर्कर और गांव की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से आंगनवाड़ी वर्कर पुष्पाए आशा वर्कर सावित्रीए सरोजए सरलए राजबालाए और चमेलीए पूनमए सुदेशए रूपेश आदि उपस्थित रहे। इन्होंने मिलकर महिलाओं को पोषणए स्वास्थ्यए बाल देखभाल और स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी महिलाओं को एक शपथ दिलाई गई कि वे गांव को साफ.सुथरा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाएंगी। साथ ही यह भी संकल्प लिया गया कि बाल विवाहए कुपोषण और भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयों का मिलकर विरोध किया जाएगा। मीटिंग के बाद गांव की गलियों में जागरूकता रैली निकाली गई। बेटी बचाओए बेटी पढ़ाओ स्वच्छ गांव स्वस्थ जीवनश जैसे नारे गूंजे। महिलाओं के साथ बच्चों ने तख्तियां लेकर रैली निकाली।

नरवाना। रैली निकालते हुए महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

जींद। कार्यशाला में भाग लेते हुए अध्यापिकाएं। फोटो : हरिभूमि

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय परंपराओं और संस्कृति के अनुरूप : डा. विद्यार्थी

जींद। हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी के निदेशक डा. धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय परंपराओं और संस्कृति के अनुरूप है। इसके साथ-साथ यह नीति बच्चों के मानसिक विकास को ध्यान में रख कर बनाई गई है। विशेष रूप से बच्चों की प्राइमरी शिक्षा बच्चों की मातृभाषा में देने का प्रावधान किया गया है। उसके पश्चात बच्चे चाहे अंग्रेजी, फ्रांस, जापान या किसी भी देश की भाषा सीख सकते हैं। हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी के निदेशक डा. धर्मदेव विद्यार्थी डीएवी पब्लिक स्कूल में तीन दिन तक चली कार्यशाला के अंतिम दिन शिक्षकों को और प्राचार्य को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग इतनी तेज गति से बदल रहा है। जिसमें संस्कृति के अवमूल्यन की संभावनाएं भी तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल शिक्षक ही ऐसा वर्ग है जो संस्कृति को बचाए रख सकता है। इस कार्यशाला में हरियाणाभर के 700 से अधिक शिक्षकों और प्राचार्य ने भाग लिया।

कार्यक्रम विद्यार्थियों को पोक्सो एक्ट की दी जानकारी

अच्छा स्वास्थ्य ही अच्छे जीवन की कुंजी है : डा. पांचाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल पुलिस लाइन जींद में चल रहे राज्य स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना के कैंप के पांचवें दिन की शुरुआत योगाचार्य सूर्यदेव द्वारा योगाभ्यास से हुई। सभी स्वयंसेवक व सेविकाओं ने योग व योग के महत्व को जाना। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह साढ़े नौ बजे हुई। जिसमें मुख्यअतिथि के रूप में डिप्टी सिविल सर्जन डा. रमेश पांचाल और विशिष्ट अतिथि के रूप में एडवोकेट ज्योति मान शामिल हुए। दोनों अतिथियों का फूलमालाओं से स्वागत किया गया व मां भगवती के समक्ष दीप प्रज्जवलित करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की गई। शुरुआत में अनेक स्वयंसेवकों ने सांस्कृतिक नृत्य व गायन की प्रस्तुतियां दी। एडवोकेट ज्योति मान ने बताया कि पॉक्सो एक्ट किस तरह से बच्चों के अधिकारों को सुरक्षित करते हुए उन्हें यौन अपराधों से उनकी रक्षा करता है। उन्होंने अनेक उदाहरण देकर समझाया कि युवाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता के कानूनी प्रावधानों का अध्ययन कर उन पर अम्ल करना चाहिए। समाज में फैल रही बुराइयों को रोकने सहायता करनी चाहिए। डा. रमेश पांचाल ने सभी स्वयंसेवकों को नशे बचने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि सरकार विद्यालय में पढ़ रहे छात्र छात्राओं के स्वास्थ्य के प्रति गंभीर रूप से काम कर रही है। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालय में पढ़ बच्चों को उच्चतम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए कार्य कर रही हैं। सभी विद्यार्थियों को अपने माता-पिता को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए और बच्चों व गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए घरों के अंदर स्वच्छ वातावरण को कायम करने के प्रयास करने चाहिए। कार्यक्रम के अंत में सभी कार्यक्रम अधिकारियों व जिला संयोजक हंसवीर रेढू ने अतिथियों का धन्यवाद किया। इस मौके पर रीना, स्वीटी, पूनम, देवेंद्र कौशिक, मनोज कुमार, सतीश, राजेश लाम्बा, शशिकांत इत्यादि उपस्थित रहे।

जींद। बच्चों को संबोधित करते हुए डा. रमेश पांचाल। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 29 जून 2025

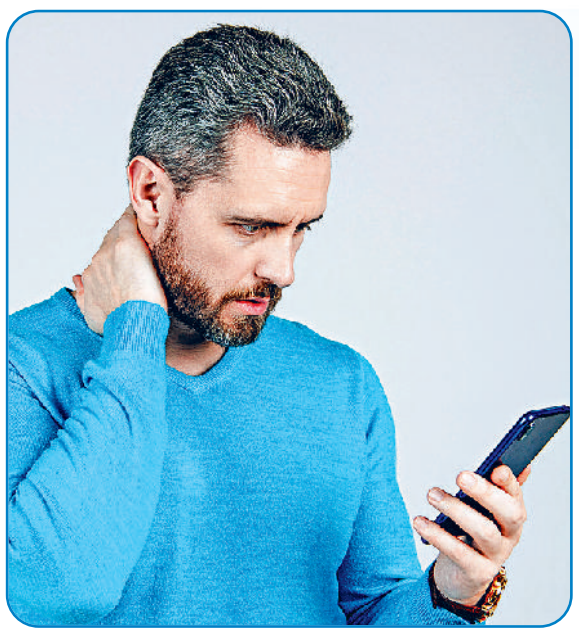

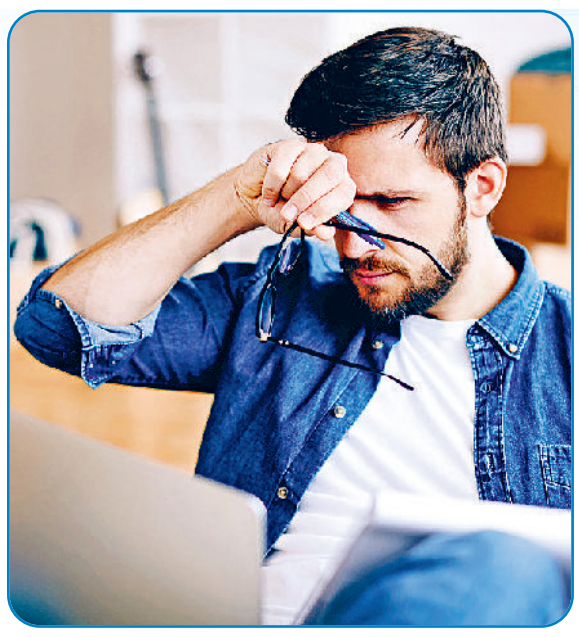

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

स्पेशलः वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

{ कवर स्टोरी }
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

{ टेक्नोबिहेवियर }
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलर: सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूजः कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्सः सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे- ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

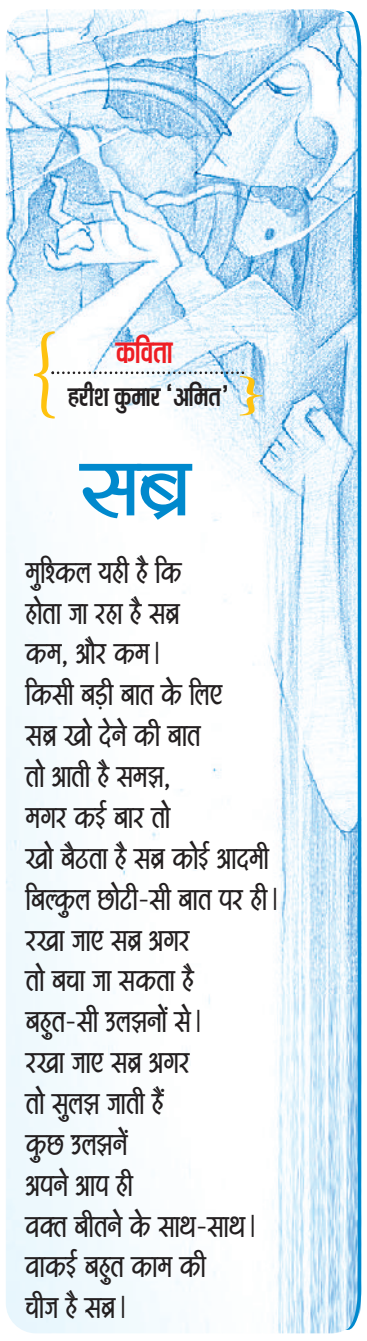

{ कविता }
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

{ व्यंग्य / संदीप भटनागर }

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

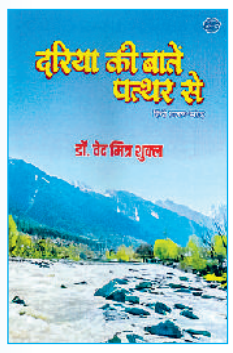

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तकः दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखकः डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्यः** 290 रुपए,
प्रकाशकः सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

{ लघुकथा }
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

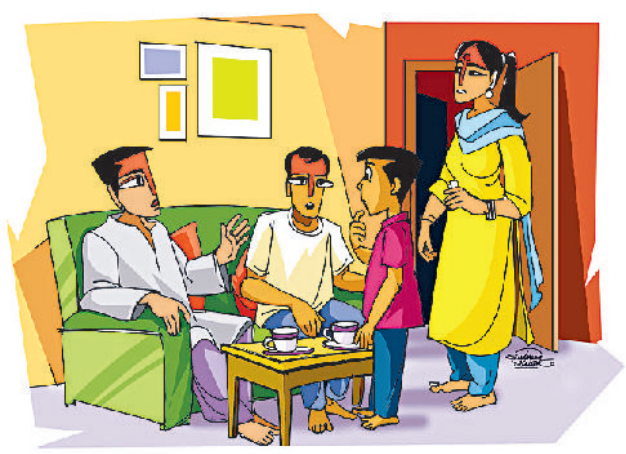

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवार्टर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

{ टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम }

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

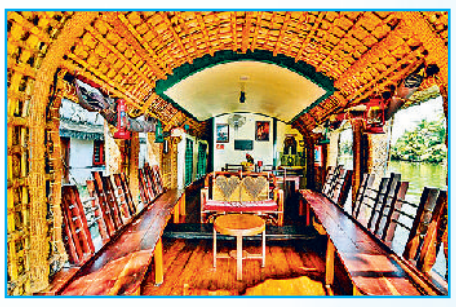

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

{ अचीवमेंट / सुनील कुमार महला }

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

{ उपयोगी पेड़ / वीना गौतम }

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

{ रोचक / शिखर चंद जैन }

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

{ सिने जगत / चेतना झा }

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *